महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

मानविकी एवं भाषासंकाय

संस्कृत विभाग

एम. ए. द्वितीय सत्र

विषय- उत्तररामचरित

Code – SNKT2002

उपविषय- भवभूतेः भाषाशैली

प्रो. प्रसून दत्त सिंह
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

भवभूतेः भाषाशैली

संस्कृत नाट्य काव्य रचयिताओं में भास, कालिदास तथा भवभूति की त्रयी विशेष प्रसिद्ध है। इनके नाट्यवैशिष्ट्य की झलक मात्र इसी बात से हो जाती है कि आलोचक कविचूडामणि कालिदास से सदा ही इनकी तुलना करते रहे हैं और इन्हें समकक्ष नहीं तो कालिदास के उपरान्त श्रेष्ठ नाटककार (कवि) तो मानते ही हैं। किंवदन्ती है कि एक बार किसी ने कालिदास से पूछा कि नाटक के क्षेत्र में आप और भवभूति में अधिक सफल कौन हैं तो कालिदास का उत्तर था -

नाटकं भवभूतिर्वा वर्य वा वयमेव वा।

उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते॥

अर्थात् नाटक की रचना में 'भवभूति' अथवा मैं या इन दोनों में कोई श्रेष्ठ है अथवा (हो सकता है) मैं ही श्रेष्ठ हूं। किन्तु उत्तररामचरित में भवभूति मुझसे विशिष्ट हैं।

यद्यपि यह किंवदन्ती कालिदास और भवभूति के कालक्रम से मेल नहीं खाती किन्तु भवभूति की महत्ता का निदर्शन तो कराही देती है।

भवभूति का वास्तविक नाम क्या था ? यह विवाद का विषय है। उनके दो अन्य नाम श्रीकण्ठ तथा भद उम्बेक भी प्राप्त होते हैं। 'श्रीकण्ठ' नाम तो उनका पितृप्रदत्त अथवा प्रसिद्धिगत अवश्य था किन्तु भद उम्बेक वही थे या कोई अन्य व्यक्ति इस पर विचारकों में मतभेद है। डा.पी.वी. काणे तथा प्रोत्र कुप्पस्वामी शास्त्री के अनुसार भवभूति तथा उम्बेक दोनों एक ही व्यक्ति के नाम हैं। दर्शन जगत् में भवभूति उम्बेक नाम से जाने गये। इसके विपरीत डा. मिराशी तथा डा. कुन्हन राजा ने भवभूति और उम्बेक को दो प्रबल व्यक्ति माना है। वैसे अधिकांश विचारक प्रथम मत से ही सहमत हैं। प्रो. काणे के अनुसार भवभूति नाटककर्ता होने के कारण नाटकीय पात्रों के तुल्य अपना नाम बदलने में निपुण थे। दक्षिण भारत में उन्होंने द्रविड़ोचित उम्बेक नाम रख लिया।

भवभूति लिखित तीन साहित्यिक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं -

महावीरचरित : यह भवभूति का प्रथम नाटक है और प्रथम काव्य होने के कारण इसमें वह भाषीय परिष्कार और काव्यगत चमत्कार नहीं दिखता, जो हमें उनके परवर्ती ग्रन्थों में दिखता है। इसमें सात अंकों में राम विवाह से राम के राज्याभिषेक तक की कथा वर्णित है। रामायण पर आधारित होने के बावजूद इस पर मुख्यतः भास के 'अभिषेक' तथा रामचरित का ही प्रभाव परिलक्षित होता है।

मालतीमाधव : यह दस अङ्कों का एक प्रकरण ग्रंथ है जिसमें मालती-माधव की कल्पना प्रसूत प्रेमकथा वर्णित है। इस पर भास के 'अविमारक' नाटक का प्रभाव दिखता है यद्यपि दोनों का कथानक लोक - कथाओं से लिया गया है। इसकी कथा का साम्य सुबन्धु की वासवदत्ता से भी है।

उत्तररामचरित : भवभूति का यह अन्तिम और सर्वाधिक प्रसिद्ध नाट्य ग्रन्थ है जिसमें रामायण की उत्तरार्द्ध कथा सात अंकों में निबद्ध है। उत्तरामचरितम् में भवभूति ने कथा में अनेक मौलिक परिवर्तन कर दिये हैं, जिनमें दो घटनायें विशेष रूप से ध्यातव्य हैं –

प्रथम - लव-कुश का राम से युद्ध न कराकर उनका चन्द्रकेतु से युद्ध करना (राम की वीरता की रक्षा करना)।

दितीय - अन्त में सीता का राम से पुनर्मिलन (नाटक को दुःखान्त होने से रोकना)

इसके अतिरिक्त चित्रवीथीदर्शन, राम का वनदेवता वासन्ती से मिलन, दण्डकारण्य में छाया - सीता की उपस्थिति, वाल्मीकि आश्रम में जनक कौशल्या, वशिष्ट, अरूधती आदि का आगमन तथा सातवें अंक का गर्भाङ्क आदि भी कवि की नितान्त मौलिक कल्पनायें हैं।

इन परिवर्तनों को सर्वथा मौलिक तो नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इसकी कथा अनेकशः पद्मपुराण के पाताल अंक में वर्णित रामकथा के सदृश है और डा. बेलावस्कर ने तो उत्तररामचरित को पद्मपुराण पर आधारित भी माना है। लेकिन यह भी बहुत निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, क्योंकि पुराणों में समय - समय पर प्रक्षेप होते रहे हैं और संभव है कि उत्तररामचरित के उपरान्त ही पद्मपुराण में यह कथा पक्षिप्त हुई हो।

वैसे यदि हम पद्मपुराण के उत्तररामचरित से साम्य रखनेवाले कथाशों को हटा भी दें, तो भवभूति अपनी उत्कृष्ट कल्पना के लिये अपना महत्त्व अक्षुण्ण रखेंगे। वस्तुतः जिस तरह से कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् में महाभारत की कथा को अपनी प्रतिमा से नितान्त मौलिक रूप दे दिया, उसी प्रकार भवभूति ने भी उत्तररामचरित की कथा को अनूठी विशिष्टता प्रदान की है।

मूलतः केवल कवित्व चमत्कार हेतु ही नहीं, अपितु अन्य कारणों से भी मूलकथा में परिवर्तन अपेक्षित था। सर्वप्रथम रामायण की कथा सुखान्त थी जिसे नाट्यशास्त्रीय मानकों के अनुरूप सुखान्त बनाना था, पुनः राम की वियोगजन्य पीड़ा की अभिव्यक्ति के साथ - साथ सीता के समक्ष उसके परोक्ष प्रकटीकरण के द्वारा राम के चरित्र को निष्कलुष और उदात्त भी दिखाना था। अपने इस प्रयत्न में भवभूति पूर्णतया सफल हुए हैं।

भवभूति करूण रस के कवि हैं और उन्होंने करुण रस को वह वैशिष्ट्य प्रदान किया है, जिससे यह काव्य का मुख्य रस भी माना जा सके। वस्तुतः भवभूति का करूण रस में वही स्थान है जो श्रृंगार रस में कालिदास का। दोनों ही नाटककार के रूप में प्रतिस्पर्द्धी महाकवि हैं। कालिदास अपनी विविध विशिष्टताओं के कारण शीर्षस्थान तो रखते हैं, किन्तु कम से कम दो पक्षों में भवभूति आगे बढ़े हुये हैं।

प्रथम - करूण रस सिद्धि में भवभूति का कोई सानी नहीं है। विभिन्न समालोचकों ने विभिन्न रूपों में एतदर्थ भवभूति की प्रशंसा की है। कहा भी जाता है

'कारूण्यं भवभूतिरेव तनुते'

दूसरे - कालिदास का प्रेम भौतिकवादी अधिक है वहां शारीरिक सौंदर्य व आकर्षण का भी प्राधान्य है। इसके विपरीत भवभूति आन्तरिक भावनाओं के कवि हैं। मानव की अन्तः स्थिति का जितना सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भवभूति ने किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि भावों की गहरायी में प्रेम का अत्यन्त उदात्त रूप प्रस्तुत करता है। उनकी वाणी में इतना बल है कि वे वृक्ष - वनस्पति ही नहीं अपितु पर्वतों को भी रुला देने की क्षमता रखते हैं।

भाव के अतिरिक्त भाषा पर भवभूति का असाधारण अधिकार है। उत्तररामचरित में भवभूति की स्वतः गर्भोक्ति है **"यं ब्रह्माणमियं देवी वाऽवश्येवानुवर्तते"**। जिसको सरस्वती देवी वशवर्तिनी के तुल्य अनुसरण करती हैं।

अवसरानुकुल प्रसाद, माधुर्य, ओज गणों से युक्त शैली, भाषीय प्रौढ़ता तथा अर्थगाम्भीर्य भवभूति की प्रकृति में ही निहित है। गौड़ी रीति के तो वे निःसन्देह श्रेष्ठ कवि गिने जाते हैं। उत्तररामचरित में गौड़ी और वैदर्भी का मणिकांचन संयोग है। करूण रस के वर्णनों में वैदर्भी रीति है तथा वीर रस और प्रकृति वर्णनों में गौड़ी रीति है।

भावानुकूल भाषा का ऐसा प्रयोग कम ही देखने को मिलता है। उनकी भाषा सरल और क्लिष्ट, सुबोध और दुर्बोध, कोमल और कठोर समासरहित और समाससहित इन विरोधी गुणों से युक्त हैं।

शब्दों का चयन भी सावधानीपूर्वक किया गया है, जिससे वाक्य - विन्यास नितान्त श्लाध्य हो गया है।

अत्यन्त रोचक तथ्य यह है कि भवभूति प्रकृत्या गौड़ी रीति के कवि हैं वे वीरस प्रधान रचना (महावीरचरित) में नहीं, अपितु करूण रस प्रधान रचना (उत्तररामचरित) में सफल हुये।

भवभूति की शैली विवरणात्मक और वाच्यार्थ प्रधान है उनके नाटकों में अभिधा वृत्ति मुख्य है। लक्षणा और व्यञ्जना वृत्तियों का न्यूनतम आश्रय लिया गया है। कालिदास में व्यञ्जना है तो भवभूति में अभिधा की मुख्यता है। अतएव वे वर्ण्य - वस्तु का साङ्गोपाङ्ग चित्रण प्रस्तुत करते हैं।

भवभूति ने संवादों की रोचकता बनाये रखी है। सबसे महत्त्वपूर्ण है उनके द्वारा संवादात्मक श्लोकों का प्रयोग, जिसमें श्लोक का पूर्वार्द्ध एक व्यक्ति बोलता है और उत्तरार्द्ध दूसरा व्यक्ति। कुछ स्थलों पर एक ही श्लोक अनेक पात्र बोलते हैं। भवभूति में अनेक श्लोकों की बारंबार आवृति भी की गयी है। उन्होंने अपने तीनों नाटकों में 43 श्लाकों या श्लोकांशों की पुनरावृत्ति की है।

वस्तुतः भवभूति प्रयोगधर्मा कवि हैं। उनकी यह प्रयोगधर्मिता गङ्गा गोदावरी, वनदेवता आदि प्राकृतिक तत्वों के मानवीकरण के द्वारा भी परिलक्षित होती है जो उनकी महत्वूपर्ण विशेषता है। इसके अतिरिक्त भवभूति ने परंपरागत प्रणाली के परित्याग का भी प्रचुर प्रयास किया है। उन्होंने अनेक परंपरागत प्रतीकों जैसे - कोयल की ध्वनि, आम्रमञ्जरी, चन्द्र - ज्योत्स्ना आदि को प्रयोग में नहीं लाया है। उनके किसी भी नाटक में विदूषक का प्रयोग भी नहीं है।

उपमाओं के प्रयोग में भी भवभूति ने कुछ मौलिकतायें लायी है। उदाहरणार्थ बहते आंसुओं की उपमा टूटी हुयी मोती की माला से, सस्वेद बाहूओं की उपमा चन्द्रकौमुदी से परिस्रुत चन्द्रकान्त मणि से, सीता के लोकापवाद की उपमा पागल कुते के विष से, राम के करूण रस की उपमा पुटपाक से, सीता की उपमा कारूण्य और विरह व्यथा से। भवभूति के पात्र आदर्शपरक हैं, सभी अपनी मर्यादा की सीमाओं में रहते हैं। किन्तु सर्वथा आदर्शपरकता के कारण उनके पात्रों में वह चरित्र - वैविध्य नहीं मिलता जैसा कि मृच्छकटिकम् आदि में उपलब्ध है।

किन्तु चरित्र-चित्रण में जैसा रसोत्कर्ष और जैसी मनोवैज्ञानिकता दिखायी गयी है, उससे वैविध्य की न्यूनता पूरित हो जाती है।

भवभूति ने तृतीय अंक में छाया - सीता की एक अनूठी कल्पना प्रस्तुत की है, और इसके द्वारा उन्होंने रोचक ढंग से राम और सीता के हृदयोदगारों को अभिव्यक्त कर दिया है। हालांकि गर्भनाटक और छाया सीता की इस परिकल्पनाओं को कुछ आलोचकों ने निरर्थक बताया है। किन्तु वास्तव में यह कल्पना उत्तररामचरितम् की संजीवनी है। जिस प्रकार मेघदूतम् में मेघ की दूत के रूप में परिकल्पना और स्वप्नवासवदतम् में स्वप्निल उदयन की जाग्रत वासवदत्ता से वार्ता की परिकल्पना संस्कृत वाङ्मय में अपना अनूठा स्थान रखती है उसी प्रकार छाया - सीता की कल्पना भी अप्रतिम है।

भवभूति की रचनाओं में काव्यकला का भावपक्ष ही प्रधान है और विभाव पक्ष गौण। किसी भाव या मनः स्थिति का चित्रण करते समय वे कालिदास के समान उपमा आदि अलङ्कारों का सहारा नहीं लेते वरन् अत्यन्त प्रभावशाली शब्दों में उसकी गूढ से गूढ दशा का बड़ा ही सूक्ष्म और व्यौरेवार वर्णन उपस्थित कर देते हैं।

उदाहरणार्थ -

"किमपि किमपि मन्दं मन्दमासक्तियोगा
दविरलितकपोलं जल्पतोरक्रमेण
अशिथिलपरिरम्भव्यापृतैकैकदोष्णो
रविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्॥"

भवभूति भावों को इतनी गहराई तक पहुंचते हैं कि वे कभी - कभी अनेक भावों का एक साथ ही पञ्चामृत उपस्थित कर देते हैं।

उदाहरणार्थ बारह वर्षों के दीर्घ वियोग के उपरान्त दण्डकारण्य में राम का साक्षात्कार कर सीता के मन में एक साथ कितने भाव उठ रहे है

'तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं

तमसा सीता से कह रही है - हे बेटी ! इस समय तुम्हारा हृदय पुनः समागम की आशा न रह जाने के कारण उपेक्षामय, अकारण परित्याग से विवादपूर्ण, दीर्घवियोग में अचानक भेंट हो जाने से नितान्त स्तब्ध, राम के सहज सौजन्य से प्रसन्न, प्रिय के विलापों से अत्यन्त शोकाकुल, तथा निरतिशय प्रेम के कारण सर्वथा द्रवीभूत सा हो रहा है।

भवभूति अपने पद्यों में अर्थ के अनुकूल ध्वनि पैदा करने में विशेष कुशल हैं। उनके शब्दों में वर्ण-वस्तु की झंकार स्पष्ट सुनायी पड़ती है। साथ ही छन्दों के प्रयोग में भी भवभूति ने अत्यन्त प्रवीणता दिखायी है। वे कभी तो मसृण अथवा विकट वर्णों से तो कभी वर्णों के विन्यास कौशल से भाव की व्यञ्जना कर देते हैं। शिरवरिणी के प्रयोग में तो वे अद्वितीय माने जाते हैं। क्षेमेन्द्र ने भवभूति की शिरवरिणी की अत्यन्त प्रशंसा की है –

"भवभूतेः शिरवरिणी निरर्गलतरङ्गिणी।

रूचिरा धन सन्दर्भ सा मयुरीव नृत्यति॥"

भवभूति की पद्यशैली की ही भांति गद्य शैली भी अत्यन्त मनोहर है। यथा - **अहो दलन्नवनीलात्पलश्याम"**

भवभूति ने यत्र - तत्र व्यंग्य का भी बड़ा मर्मभेदी प्रयोग किया है। प्रथम अक में राम को 'नूतन राजा' कहा गया है, जो कोई भी (सीता - निर्वासन का भी) आदेश दे सकता है।

'तृतीय अंक में राम का विशेषण रघुनन्दन है, जिससे यह संकेत मिलता है कि उन्हें बस अपने वंश की ही चिन्ता है। लव की राम के प्रति व्याजोक्ति तो अत्यन्त तीखी है –

'श्री रामचन्द्र जी वयोवृद्ध हैं। अतः उनके चरित्र की आलोचना उचित नहीं।

अबला स्त्री (ताड़का) को मारकर भी उनका यश कुण्ठित नहीं हुआ। और संसार में अब भी महापुरूष माने जाते हैं। खर राक्षस से युद्ध करते समय वे जो तीन पग पीछे हटे थे अथवा इन्द्र के पुत्र बाली को मारने में उन्होंने जिस कौशल का परिचय दिया था उन सभी बातों से सारा संसार भली - भांति परिचित हैं।

भवभूति के अनेक प्रयोग नाट्यशास्त्रीय मानकों के प्रतिकूल पड़ने के कारण दोष मान लिये गये हैं। किन्तु इनमें आंशिक सत्यता ही है और आधुनिक मानदण्डों पर ये दोष गुण बन जाते हैं।

न्यूनतायें

(1) नाटक का अङ्गी रस श्रृंगार या वीर ही होना चाहिये।
(2) विदूषक का अभाव।
(3) नायक पर भी लाञ्छन (व्यंग्य)।
(4) नायक की अधीरता ।
(5) वस्तु - विन्यास में शिथिलता
(6) भाषा की दुरूहता।
(7) संवादों का विस्तार।
(8) अनेक अनुचित प्रसङ्ग।

उत्तररामचरित में करूण रस सिद्धि

लक्षणग्रन्थों के अनुसार दृश्यकाव्य में श्रृंगार या वीररस ही होना चाहिये, परन्तु महाकवि भवभूति का उत्तररामचरितम इस नियम का अपवाद है।

रसों की प्राचीन परम्परा को मानने वाले कुछ आलोचक उत्तररामचरितम को विप्रलम्भ - श्रृंगार के अन्तर्गत सिद्ध करने का प्रयास करते हैं, किन ऐसा मानना भवभूति के साथ घोर अन्याय है। भवभूति ने स्पष्ट रूप से इसमें करुण रस माना है। उनकी मान्यता है कि श्रृंगार आदि भी करूण के ही विकार हैं।

एको रसः करूण एव निमित्तभेदाद्
भिन्नः पृथक् पृथगिव श्रयेत निवर्तान्।
आवर्तबुद्बुदतरङ्गमयान्विकारा-
नम्भो यथा सलिलमेवे तु तत् समस्तम्॥

(2) तृतीय अंक का प्रारम्भ और अन्त करूण रस से होता है।

(3) सामान्यतया करूण विप्रलम्भ श्रङ्गार अविवाहित प्रेमी-प्रेमिका के प्रणय से होता है। उसके आलम्बन विवाहित दम्पति नहीं होते।

(4) राम का रोदन वियोगी प्रेमी का रोदन नहीं है अपितु विधुर पति का रोदन है।

हा हा देवि ! स्फुटित हृदयं संसते देहबन्धः शून्यं मन्ये जगदविरलज्वालमन्तवलामि।

सीदन्नन्धे तमसि विधारो मज्जतीवान्तरात्माः विष्वड् मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि

(5) यदि सीता परित्याग सावधि होती और मिलन की आशा होती तो विप्रलंभ श्रृंगार होता, किन्तु यह परित्याग निरावधि है अतः सीता परित्यागजन्य शोक के कारण करूण रस है।

(7) रावण ने छद्म-नीति का प्रयोग करके सीता का हरण किया। उसके वियोग में राम की वह दयनीय स्थिति थी कि पत्थर भी रो देते थे और वज्र का हृदय भी फट जाता।

अथेदं रक्षोभिः कनकहरिणछद्मविधिना
तथा वृत्तं पापयंथयति यथा क्षालितमपि।
जनस्थाने शून्ये विकलकरणैरार्यचरितै
रपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वजस्यहृयम्॥

इस प्रकार न्युनमेव महाकवि भवभूति नाटककार के रूप में सर्वतोभावेन श्रेष्ठ एवं अद्वितीय कवि है।

धन्यवाद